Index

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय–वस्तु	पृ. क्रमांक
	Cover Page	i
	Certificate	ii
	Declaration	iii
	विषय प्रवेश	iv
	Acknowledgement कृतज्ञता ज्ञापन	vii-xv
	Abstract शोध सार	xvii-xix
	अनुक्रमणिका Index	xxi-xxvi
1	स्वतंत्र तबलावादन, एक रियाज़ की दृष्टिकोन से	1 – 19
	प्रस्तावना	
	1.1. स्वतंत्र तबलावादन में उपयुक्त वर्ण, एवं महत्त्व	
	1.2. स्वतंत्र तबलावादन की परिभाषा	
	1.3. स्वतंत्र तबलावादन में उपयुक्त वर्ण	
	1.4. वर्ण की परिभाषा	
	1.5. वर्ण एवं पटाक्षर	
	1.6. वर्ण एक उपादेयता	
	1.7. वर्ण का उद्देश	
	1.8. वर्ण की आवश्यकता	
	1.9. वर्ण का प्रयोग	
	1.10. वर्ण की सफलता	
	1.11. वर्ण एवं रचना	
	1.12. वर्ण में स्वर एवं व्यंजन	

	1.13. एकहरे अक्षर तथा बधाक्षर (जोड़अक्षर) याने एक वर्ण वाला अक्षर / एक से जादा वर्ण वाला अक्षर	
	1.14. वर्ण एवं शब्द, शब्दसमूह	
	1.15. वर्ण एवं निकास	
	1.15.1. वर्ण निकास एवं नाद	
	1.16. वर्ण एवं रियाज़	
	पाद – टिप्पणीयाँ	
2	रियाज़ की प्राथमिक जानकारी	21 – 39
	प्रस्तावना	
	2.1. रियाज़ की परिभाषा	
	2.2. रियाज़ एक मुलभूत शब्द	
	2.3. रियाज़ एवं निकास	
	2.4. रियाज़ एक प्रणाली	
	2.5. रियाज़ एवं रचना	
	2.6. रियाज एक संतुलन	
	2.7. रियाज़ एक बैठक	
	2.8. रियाज़ एवं समय	
	2.9. रियाज़ एवं वाद्य का संबंध	
	2.9.1. रियाज़ः फायदे एवं गैरफायदे, वाद्य की दृष्टिकोन से	
	2.10. रियाज़ एवं स्थान	
	पाद–टिप्पणीयाँ	
3	तबला वादन कला में रियाज़ः एक महत्व	41 – 61
	प्रस्तावना	
	3.1. तबला वादन का अर्थ	
	3.1.1 तबला वादनः सभी घरानों की दृष्टिकोन से	
	3.2. स्वतंत्र तबला वादन एवं साथसंगत	

	3.3. तबला वादन एक कला	
	3.4. तबला वादन एवं रियाज़ का संबंध	
	3.5. तबला वादन में रियाज का महत्व	
	3.6. वादन प्रस्तुति एवं रियाज़ परस्पर संबंध	
	3.7. व्यक्तिगत रियाज़	
	3.8. सामूहिक रियाज़	
	3.9. रियाज़ की पारंपारिक पध्दतियाँ	
	3.10. पारंपारिक पध्द्तियाँः फायदे एवं गैरफायदे (रियाज की दृष्टिकोन से)	
	3.11. रियाज़ एक प्रयोग	
	3.12. रियाज़ एक आवश्यकता	
	3.13. रियाज़ एक सफलता	
	3.14. रियाज़ एवं कलाकार	
	पाद–टिप्पणियाँ	
4	सैध्दांतिक रियाज़	63 – 105
	प्रस्तावना	
	4.1. सिध्दांत का अर्थ	
	4.2. सिध्दांत की आवश्यकता	
	4.3. रियाज़ एवं सिध्दांत का पारस्पारिक संबंध	
	4.4. सिध्दांत एवं पढंत	
	4.5. पढ़ंत का अर्थ एवं परिभाषा	
	4.6. पढंत एवं तबले की भाषा	
	4.7. पढ़ंत एक आवश्यकता	
	4.7.1. पढ़ंत में 'ऱ्हस्व–दीर्घ' तथा 'स्वर–व्यंजन' का महत्व	
	4.8. पढ़ंत एवं बोलपंक्ति	
	4.8.1. पढंत एवं निकास परस्पर संबंध	

	4.9. पढंत एवं लय	
	4.10. पढंत एवं विभिन्न लयकारियाँ	
	4.11. पढंत एवं ताली – खाली	
	4.12. पढंत–स्वतंत्र तबला वादन की दृष्टिकोन से	
	4.13. विलंबित लय में पढंत का महत्व	
	4.14. मध्यलय में पढंत का महत्व	
	4.15. द्रुतलय में पढंत का महत्व	
	4.16. पढंत : कलाकार बनने में उपयोगी	
	4.17. पढंत एक छंद	
	4.18. तबले का रियाज़ः एक विद्यार्थी की दृष्टिकोन से	
	4.19. तबले का रियाज़ः एक कलाकार की दृष्टिकोन से	
	4.20. तबले का रियाज़ः एक लेखक की दृष्टिकोन से	
	4.21. तबले का रियाज़ः एक श्रोता की दृष्टिकोन से	
	पाद–टिप्पणीयाँ	
5	क्रियात्मक रियाज़	107 – 204
	प्रस्तावना	
	5.1. क्रियात्मक पक्ष का अर्थ	
	5.2. शास्त्रीय संगीत में क्रियात्मक का महत्व	
	5.3. क्रियात्मक पक्ष एवं कलाकार	
	5.4. क्रिया एवं कलाकार का संबंध	
	5.5. स्वतंत्र तबलावादन – एक क्रियात्मक दृष्टिकोन	
	5.5.1. क्रियात्मक पक्ष एवं रियाज़ का परस्पर संबंध	
	5.6. स्वतंत्र तबलावादन का विधिवत क्रम एवं उसका रियाज	
	5.7. क्रियात्मक रियाज़ में वादनक्रम	
	5.7.1. पेशकार	
	5.7.2. पेशकार कायदा	

	5.7.3. कायदा	
	5.7.3.1. कायदे के विभिन्न प्रकार	
	5.7.4. रेला	
	5.7.4.1. रेले के विभिन्न प्रकार	
	5.7.5. मुखड़ा	
	5.7.6. टुकडा	
	5.7.7. गत	
	5.7.7.1. गतों के प्रकार	
	5.7.8. गत कायदा	
	5.7.9. चक्रदार	
	5.7.9.1. चक्रदार के प्रकार	
	5.7.10. फरद	
	5.7.11. नौहक्का	
	5.7.12. तिहाई	
	पाद–टिप्पणीयाँ	
6	रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशेः विविध घरानों की दृष्टिकोन से	205 – 237
	प्रस्तावना	
	6.1. आदर्श बोलपंक्ति एवं बंदिशः अर्थ	
	6.2. घराना एवं बंदिशः परस्पर संबंध	
	6.3. बंदिश का महत्त्व एवं स्थान, घरानों की दृष्टिकोन से	
	6.4. रियाज़ एवं बंदिशः परस्पर संबंध तथा महत्त्व	
	6.5. तबले के विविध घराने एवं बंदिशे	
	6.5.1 दिल्ली घराना	
	6.5.2. अजराड़ा घराना	
	6.5.3. लखनौ घराना	

	6.5.4. फर्रूखाबाद घराना	
	6.5.5. बनारस घराना	
	6.5.6. पंजाब घराना	
	पाद–टिप्पणीयाँ	
7	उपसंहार	239 – 244
8	संदर्भ ग्रंथसूची (Biobliography)	245 – 247